प्रतिदर्श
प्रश्न-पत्र

हिंदी केंद्रिक कक्षा 12

समय : **3 घंटे** पूर्णांक : **80**

निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
2. खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं। सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
4. दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
5. यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

■ खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

खंड 'अ' में अपठित बोध, अभिव्यक्ति और माध्यम, पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग-2 व पूरक पाठ्य पुस्तक वितान भाग-2 से संबंधित बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे गए हैं। जिनमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है।

अपठित बोध

1. *निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।* $(1 \times 10 = 10)$

कहा जाता है, "जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान……!" कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान से होनी चाहिए, किसी अन्य आधार पर नहीं, किंतु जाति आधारित व्यवस्था ने एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से भिन्न बना दिया है। यूँ तो भारत में प्राचीनकाल में कर्म आधारित जाति व्यवस्था को अत्यंत उपयोगी सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखा गया, लेकिन समय के साथ-साथ कर्म आधारित जाति व्यवस्था जन्म आधारित सामाजिक व्यवस्था की संकीर्ण रूढ़ियों से जकड़ गई और फिर धीरे-धीरे सामाजिक विखंडन की ऐसी प्रक्रिया आरंभ हुई कि किसी युग में समाज को जोड़कर परस्पर पूरक बनाने तथा राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से सामाजिक एकता को सुदृढ़ बनाए रखने की जो व्यवस्था की गई थी, वही समय बीतने के साथ अनुपयोगी सिद्ध होने लगी। कुछ ऐसी कुरीतियों एवं कुप्रथाओं ने जन्म लिया, जो समाज द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखाओं के कारण पनपीं और उनके उल्लंघन को समाजों के तथाकथित कर्णधारों ने दंडनीय अपराध घोषित कर दिया। सामाजिक बहिष्कार का दंड विधान, समाज से बहिष्कृत होने का भय, मुस्लिम को हिंदू से या हिंदू को मुस्लिम से या फिर एक जाति के सदस्य को किसी अन्य जाति के सदस्यों से प्रेम या विवाह करने से रोकता है।

संभवत: मानव समाज में स्तरीकरण दो भिन्न दिशाओं से विकसित हुआ है, हालाँकि दोनों एक-दूसरे में बहुत हद तक समा भी गए हैं। इस प्रकार के स्तरीकरणों को क्रमश: वंशागत (जातिगत) स्तरीकरण और सामाजिक (गैर-जातिगत) स्तरीकरण कहते हैं। सामाजिक स्तरीकरण में एक समाज के अंतर्गत ही पद-स्तरों की एक व्यवस्था विकसित हो जाती है। जातिगत स्तरीकरण से दो

विभिन्न समाजों के विलय का बोध हो जाता है। जब एक जातीय समूह दूसरे जातीय समूह या समूहों पर स्थायी रूप से न्यूनाधिक प्रबल हो जाता है, तो जातीय स्तरीकरण निर्मित हो जाता है। भारत में हिंदू जाति व्यवस्था इसी प्रकार के स्तरीकरण का उदाहरण है। हिंदू समाज भारत की आदिकालीन जातियों तथा कालांतर में बाहर से आकर बसने वाली विजेता आर्य जातियों के विलय से बना है।

(क) एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से भिन्न बना देने का कार्य किसने किया है? (1)

(i) धर्म आधारित व्यवस्था ने | *(ii)* कर्म आधारित व्यवस्था ने
(iii) जाति आधारित व्यवस्था ने | *(iv)* लिंग आधारित व्यवस्था ने

(ख) प्राचीनकाल में किस व्यवस्था को अत्यंत उपयोगी सामाजिक व्यवस्था के रूप में देखा गया? (1)

(i) कर्म आधारित | *(ii)* जाति आधारित
(iii) धर्म आधारित | *(iv)* ये सभी

(ग) प्रस्तुत गद्यांश किस विषय-वस्तु पर आधारित है? (1)

(i) आदिकालीन सामाजिक व्यवस्था पर | *(ii)* जाति आधारित सामाजिक व्यवस्था पर
(iii) हिंदू समाज के उदय पर | *(iv)* समाज विरोधी धारणा पर

(घ) समाज द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखाओं के कारण किसका जन्म हुआ? (1)

(i) कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का | *(ii)* अंतर्द्वंद्व का
(iii) विरोध का | *(iv)* बहिष्कार का

(ङ) भारत में हिंदू जाति व्यवस्था जातीय स्तरीकरण का उदाहरण है। लेखक इस कथन से सिद्ध करना चाहते हैं कि हिंदू समाज– (1)

(i) भारत की आदिकालीन जातियों तथा बाहर से आकर बसने वाली आर्य जातियों से निर्मित हुआ है
(ii) भारत की आदिकालीन जातियों का समूह मात्र है
(iii) बाहर से आने वाली सभी जातियों के समूह से बना है
(iv) विजेता आर्य जातियों के समूह से बना है

(च) मानव समाज में स्तरीकरण किन दिशाओं से विकसित हुआ? (1)

(i) दो समान दिशाओं से | *(ii)* दो भिन्न दिशाओं से
(iii) दो समानांतर दिशाओं से | *(iv)* दो अंतर्विरोधी दिशाओं से

(छ) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए (1)

1. जाति आधारित व्यवस्था परस्पर भेदभाव का मूल कारण है।
2. कर्म आधारित जाति व्यवस्था की अपेक्षा जन्म आधारित जाति व्यवस्था श्रेष्ठ है।
3. जाति व्यवस्था के कारण समाज में अनेक रूढ़ियों व कुप्रथाओं का जन्म हुआ।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(i) केवल 1 | *(ii)* केवल 3
(iii) 1 और 2 | *(iv)* 1 और 3

(ज) दो विभिन्न समाजों के विलय का बोध किससे होता है? (1)

(i) जातिगत स्तरीकरण से | *(ii)* सामाजिक स्तरीकरण से
(iii) समतामूलक समाज से | *(iv)* ये सभी

(झ) सामाजिक स्तरीकरण के अंतर्गत किस प्रकार की व्यवस्था विकसित होती है? (1)

(i) एक समाज के विचारों की | *(ii)* एक समाज के पद स्तरों की
(iii) दो भिन्न समाज की | *(iv)* हिंदू समाज की

(ञ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

कथन (A) सामाजिक कुरीतियों व कुप्रथाओं का उल्लंघन करना दंडनीय अपराध है।

कारण (R) सामाजिक कुरीतियाँ व कुप्रथाएँ समाज द्वारा दृढ़तापूर्वक उनका पालन कराने के उद्देश्य से विकसित हुईं।

कूट

(i) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है
(ii) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है
(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है

2. *दिए गए पद्यांश पर आधारित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।* (1× 5 = 5)

ऋषि-मुनियों, साधु-संतों को
नमन, उन्हें मेरा अभिनंदन।
जिनके तप से पूत हुई है
भारत देश की स्वर्णिम माटी
जिनके श्रम से चली आ रही
युग-युग से अविरल परिपाटी।
जिनके संयम से शोभित है
जन-जन के माथे पर चंदन।
कठिन आत्म-मंथन के हित
जो असि-धारा पर चलते हैं
पर-प्रकाश हित पिघल-पिघल कर
मोम-दीप-सा जलते हैं।
जिनके उपदेशों को सुनकर
सँवर जाए जन-जन का जीवन।
सत्य-अहिंसा जिनके भूषण
करुणामय है जिनकी वाणी
जिनके चरणों से है पावन
भारत की यह अमिट कहानी।
उनके ही आशीष, शुभेच्छा,
पाने को करता पद-वंदन।

(क) ऋषि-मुनि, साधु-संत नमन करने योग्य क्यों हैं? (1)
(i) धार्मिक विश्वास के कारण
(ii) तप, श्रम और संयम का आदर्श प्रस्तुत करने के कारण
(iii) उच्च शिक्षा का पालन करने के कारण
(iv) देश में धर्म-संस्कृति का प्रचार करने के कारण

(ख) ऋषि-मुनि अपनी किस विशेषता के कारण वंदनीय हैं? (1)
(i) सत्य (ii) अहिंसा
(iii) मधुर वाणी (iv) ये सभी

(ग) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए (1)
1. ऋषि-मुनियों के तप से भारत की मिट्टी पवित्र हो गई है।
2. प्रत्येक मनुष्य ऋषि-मुनियों का वंदन कर अपने माथे पर तिलक लगवाता है।
3. ऋषि-मुनियों के आभूषण सोने-चाँदी के नहीं वरन् सत्य-अहिंसा ही हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(i) केवल 1 (ii) केवल 3
(iii) 1 और 2 (iv) 1 और 3

(घ) 'असि-धारा पर चलते हैं' पंक्ति से क्या आशय है? (1)
(i) लोकहित में स्वयं कष्ट झेलना (ii) युद्ध के लिए तैयार रहना
(iii) तलवार को सदैव अपने पास रखना (iv) हथियारों की धार पर चलना

(ङ) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए (1)

	कॉलम- 1		कॉलम- 2
A.	ऋषि-मुनियों के आभूषण	1.	ऋषि-मुनियों के उपदेशों को सुनकर
B.	जन-धन का जीवन सँवर जाता है।	2.	सत्य अहिंसा है।
C.	ऋषि-मुनियों की वाणी	3.	करुणामय है।

कूट

	A	B	C
(i)	2	1	3
(ii)	3	2	1
(iii)	1	3	2
(iv)	3	1	2

अभिव्यक्ति और माध्यम

3. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।* (1× 5 = 5)

(क) आजादी से पूर्व का प्रमुख समाचार-पत्र कौन-सा है? (1)

(i) कर्मवीर *(ii)* प्रताप *(iii)* विशाल भारत *(iv)* ये सभी

(ख) सर्वप्रथम किस सदी में रेडियों के विकास की शुरूआत हुई? (1)

(i) 17वीं *(ii)* 18वीं *(iii)* 19वीं *(iv)* 20वीं

(ग) प्रसार भारती का गठन किस समिति की अनुशंसा पर किया गया था? (1)

(i) गायडर समिति *(ii)* वर्गीज समिति *(iii)* मेहता समिति *(iv)* नरीमन समिति

(घ) विशेष संवाददाता किसे कहते हैं? (1)

(i) जो सामान्य रिपोर्टिंग करते हैं *(ii)* जो विशेष प्रकार की रिपोर्टिंग करते हैं

(iii) जो आर्थिक क्षेत्र में रिपोर्टिंग करते हैं *(iv)* जो खेल से संबंधित रिपोर्टिंग करते हैं

(ङ) सूची 1 को सूची 2 से सुमेलित कीजिए (1)

	सूची-1		**सूची**-2
A.	क्रिकेट मैच का प्रसारण	1.	गुटेनबर्ग
B.	वर्तमान छापेखाने का आविष्कार	2.	लाइव
C.	मुद्रण का प्रारंभ	3.	रेडियो
D.	श्रव्य समाचार माध्यम	4.	चीन

कूट

	A	B	C	D
(i)	3	2	1	4
(ii)	2	1	4	3
(iii)	1	4	3	2
(iv)	4	1	2	3

पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग 2

4. *निम्नलिखित पद्यांश के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।* (1× 5 = 5)

प्रात: नभ था बहुत नीला शंख जैसे भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका (अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और ......
जादू टूटता है इस उषा का अब सूर्योदय हो रहा है।

(क) कवि ने प्रातःकालीन वातावरण की समानता नीले शंख से क्यों की है? (1)

(i) भोर के समय वातावरण का रंग नीले शंख जैसा बुझा होने के कारण

(ii) कवि को नीले शंख का रंग पसंद होने के कारण

(iii) भोर के समय वातावरण के अनेक रंग बदलने के कारण

(iv) नीले शंख के अतिरिक्त अन्य उपमा न मिलने के कारण

(ख) अलंकार की दृष्टि से कौन-सा विकल्प सही है? (1)

(i) बहुत नीला शंख जैसे—उत्प्रेक्षा अलंकार
(ii) राख से लीपा हुआ चौका—उपमा अलंकार
(iii) बहुत काली सिल—यमक अलंकार
(iv) जरा सा लाल केसर—अतिशयोक्ति अलंकार

(ग) कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा हुआ गीला चौका कहा है। यहाँ चौके के गीला होने का क्या भावार्थ है? (1)

(i) नए जीवन का उदय
(ii) वातावरण में नमी
(iii) भोजन के लिए तैयार होना
(iv) वातावरण में शुष्कता

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

कथन (A) सूर्य की किरणें हिलती हुई नायिका के समान लगती हैं।

कारण (R) प्रातःकालीन नमी एवं मंद हवा चल रही है।

कूट

(i) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है
(ii) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है
(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है

(ङ) 'नील जल' के उपमान के माध्यम से कवि किसे चित्रित करता है? (1)

(i) नीले स्वच्छ आकाश को
(ii) सुंदर स्त्री के रूप को
(iii) नीले रंग की सुंदरता को
(iv) पानी के अनेक रूप को

5. *निम्नलिखित गद्यांश के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।* $(1 \times 5 = 5)$

मैं असल में था तो इन्हीं मेंढक-मंडली वालों की उमर का, पर कुछ तो बचपन के आर्यसमाजी संस्कार थे और एक कुमार-सुधार सभा कायम हुई थी उसका उपमंत्री बना दिया गया था-सो समाज-सुधार का जोश कुछ ज्यादा ही था। अंधविश्वासों के खिलाफ तो तरकस में तीर रखकर घूमता रहता था। मगर मुश्किल यह थी कि मुझे अपने बचपन में जिससे सबसे ज्यादा प्यार मिला वे थीं जीजी। यूँ मेरी रिश्ते में कोई नहीं थीं। उम्र में मेरी माँ से भी बड़ी थीं, पर अपने लड़के-बहू सबको छोड़कर उनके प्राण मुझी में बसते थे और वे थीं उन तमाम रीति-रिवाजों, तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों की खान, जिन्हें कुमार-सुधार सभा का यह उपमंत्री अंधविश्वास कहता था और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंकना चाहता था।

(क) कुमार-सुधार सभा क्या थी? (1)

(i) समाज में व्याप्त अंधविश्वासों के खिलाफ संघर्ष करने वाली सभा
(ii) समाज के युवावर्ग को सुधारने वाली सभा
(iii) समाज से गंदगी को साफ करने वाली सभा
(iv) समाज से अलग विचारधारा लेकर चलने वाली सभा

(ख) लेखक को कुमार-सुधार सभा में कौन-सा पद मिला था? (1)

(i) सचिव
(ii) उपसचिव
(iii) मंत्री
(iv) उपमंत्री

(ग) लेखक .... में विश्वास नहीं रखता था। (1)

(i) अंधविश्वास
(ii) मूर्तिपूजा
(iii) तीज-त्योहार
(iv) साधु-संन्यासी

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

कथन (A) लेखक को समाज-सुधार का जोश कुछ ज्यादा ही था।

कारण (R) लेखक में बचपन से ही आर्यसमाजी संस्कार थे।

कूट

(i) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है
(ii) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है
(iii) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है

(ङ) कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए (1)

	कॉलम-1		कॉलम-2
A.	लेखक से सबसे ज्यादा प्यार करती थी	1.	आर्यसमाजी
B.	बचपन के संस्कार थे	2.	लेखक
C.	कुमार सुधार सभा का उपमंत्री है	3.	जीजी

कूट

	A	B	C		A	B	C
(i)	2	3	1	*(ii)*	3	2	1
(iii)	3	1	2	*(iv)*	1	3	2

पूरक पाठ्य-पुस्तक वितान भाग 2

6. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।* (1×10 = 10)

(क) 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के अनुसार, पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के कारण क्या समाप्त होता जा रहा है? (1)

(i) मानवीय मूल्य
(ii) बड़े-बुजुर्गों के प्रति समान भाव
(iii) अपनों के प्रति आत्मीयता
(iv) ये सभी

(ख) यशोधर बाबू ऑफिस में दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण कैसे करते थे? (1)

(i) छुट्टी के समय चलते-चलते जूनियरों से कोई मनोरंजक बात करके
(ii) छुटटी के समय एक कप चाय पीकर
(iii) ऑफिस की सुस्त घड़ी को सही करके
(iv) ऑफिस के कर्मचारियों को चाय पिलाकर

(ग) यशोधर बाबू द्वारा विपरीत परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास का क्या परिणाम होता है? (1)

(i) उनके मन में अंतर्द्वंद्व चलता रहता है
(ii) उनका मन प्रसन्न रहता है
(iii) उनका किसी काम में मन नहीं लगता
(iv) वे उन परिस्थितियों को सहज स्वीकार कर लेते हैं

(घ) निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए। (1)

कथन (A) आनंदा अपने पढ़ने की बात अपने दादा से नहीं कर पाता था।

कारण (R) लेखक के पिता अत्यधिक गुस्से वाले व्यक्ति थे।

कूट

(i) कथन (A) सही है, परंतु कारण (R) गलत है
(ii) कथन (A) गलत है, परंतु कारण (R) सही है
(iii) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
(iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है

(ङ) 'जूझ' कहानी में लेखक के दादा के चरित्र की विशेषता क्या है? (1)

(i) वे लेखक की प्रगति में बाधक हैं
(ii) वे राव साहब का सम्मान करते हैं
(iii) वे अपनी पत्नी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते
(iv) ये सभी

(च) 'जूझ' कहानी में आनंदा के उच्च स्तर के कवि तक का सफर किस बात का प्रमाण है? (1)

(i) उसके परिश्रम व लगनशीलता की प्रवृत्ति का
(ii) उसके झूठ बोलकर पढ़ाई करने का
(iii) पिता की बात को महत्त्व न देने का
(iv) केवल अपने मन की करने का

(छ) सिंधु घाटी की सभ्यता के बारे में पहले क्या भ्रम था? (1)

(i) ये अन्न उपजाते नहीं थे, उसका आयात करते थे
(ii) यह साधनविहीन सभ्यता थी
(iii) ये दूसरों पर निर्भर लोग थे
(iv) ये अन्न का निर्यात करते थे

(ज) यशोधर बाबू की पत्नी तथा उनके विचारों में समानता नहीं थी। इसका क्या कारण था? (1)

(i) वह घर से बाहर निकलकर नौकरी करना चाहती थी
(ii) वह आधुनिक जीवन मूल्यों को अपनाना चाहती थी
(iii) उसकी सोच स्त्रियों के विषय में आधुनिक थी
(iv) उसका व्यक्तित्व अत्यंत संकुचित था

(झ) सिंधु घाटी की सभ्यता के महाकुंड के संबंध में कौन-सा कथन सही नहीं है? (1)

(i) यह पक्की ईंटों से बना हुआ था *(ii)* यह सामूहिक स्नान व अनुष्ठान का एक अंग था
(iii) यह दस फीट चौड़ा तथा पच्चीस फीट गहरा था *(iv)* यह वास्तुकला का एक श्रेष्ठ नमूना था

(ञ) निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए (1)

1. मोहनजोदड़ो की सभ्यता लो-प्रोफाइल सभ्यता थी।
2. सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त चित्रलिपि से इस सभ्यता की जानकारी प्राप्त होती है।
3. सिंधु घाटी सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य बोध है।
4. सिंधु घाटी सभ्यता में पत्थर और ताँबे के औजार ही खेती में प्रयुक्त होते थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(i) केवल 1 *(ii)* केवल 3 *(iii)* 1, 2 और 3 *(iv)* 1, 3 और 4

■ खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)

खंड 'ब' में जनसंचार और सृजनात्मक लेखन, पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग– व पूरक पाठ्य-पुस्तक वितान भाग– से संबंधित वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनके निर्धारित अंक प्रश्न के सामने अंकित हैं।

जनसंचार और सृजनात्मक लेखन

7. *निम्नलिखित दिए गए 3 विषयों में से किसी 1 विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए।* (6 × 1 = 6)

(क) अपने जीवन की मधुर समृतियों का वर्णन (ख) वृक्ष मनुष्य के सच्चे हितैषी हैं
(ग) फैशन का बढ़ता चलन

8. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।* (2 × 2 = 4)

(क) कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने में देशकाल और वातावरण का चित्रण अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कैसे? स्पष्ट कीजिए। (2)

अथवा

अभिनेयता का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि अभिनेयता न होने से नाटकों में क्या दोष आता है?

(ख) फीचर का आकार शैलीगत विशेषताओं के कारण होता है। फीचर लेखन में किस शैली का प्रयोग होता है व क्यों? (2)

अथवा

सिनेमा या मंच पर (अभिनीत नाटकों की तुलना में) रेडियो नाटक की अवधि सीमित क्यों रखी जाती है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

9. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए।* (3 × 2 = 6)

(क) आपके क्षेत्र में आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर पर एक फ़ीचर लिखिए। (3)

(ख) समाचार के लिए प्रभाव क्षेत्र की क्या भूमिका होती है? स्पष्ट कीजिए। (3)

(ग) रिपोर्ट किसी घटना, मुद्दे या समस्या के बारे में लिखी जाती है। रिपोर्ट लेखन के विभिन्न प्रकारों को स्पष्ट कीजिए। (3)

पाठ्य-पुस्तक आरोह भाग 2

10. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए।* (3 × 2 = 6)

(क) ''भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर-लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है।'' क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। (3)

(ख) 'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि किशोर और युवावर्ग समाज का मार्गदर्शक हैं। युवावर्ग ही विश्व की एकता को स्थायित्व दे सकता है। (3)

(ग) कवि प्रकृति के सौंदर्य को रोककर रखना चाहता है, क्यों? 'बगुलों के पंख' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (3)

11. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए।* $(2 \times 2 = 4)$

(क) लक्ष्मण के बिना राम अपनी दशा की तुलना किससे करते हैं तथा कैसे? (2)

(ख) पृथ्वी का प्रत्येक कोना बच्चों के पास स्वतः आ जाता है, कैसे? 'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) 'उषा' कविता में कवि ने भोर के नभ की पवित्रता, निर्मलता तथा उज्ज्वलता को किन रूपों में स्पष्ट किया है? (2)

12. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए।* $(3 \times 2 = 6)$

(क) भक्तिन के शास्त्रार्थ को स्वीकार करना किसी तर्क शिरोमणि के लिए भी संभव नहीं था। इस कथन के आलोक में भक्तिन की तर्कशक्ति की प्रखरता को सिद्ध कीजिए। (3)

(ख) सभी पर बाज़ार का जादू क्यों नहीं चल सकता है? भगत जी का उदाहरण देकर इस कथन की पुष्टि कीजिए। (3)

(ग) 'काले मेघा पानी दे' कहानी में इंदर सेना का अन्य नाम क्या था? (3)

13. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए।* $(2 \times 2 = 4)$

(क) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ख) 'कालिदास अनासक्त योगी की तरह थे, इसलिए वे मेघदूत काव्य का निर्माण कर सके।' लेखक के इस कथन का क्या अभिप्राय है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) हमारे समाज में जाति-प्रथा किस रूप में स्थापित की गई है? 'श्रम विभाजन' पाठ के आधार पर बताइए। (2)

पूरक पाठ्य–पुस्तक वितान भाग 2

14. *निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 3 प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए।* $(2 \times 2 = 4)$

(क) 'जूझ' कहानी प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरक कथा है। इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। (2)

(ख) 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए। (2)

(ग) 'यशोधर बाबू दो भिन्न कालखंडों में जी रहे हैं' पक्ष या विपक्ष में सोदाहरण तर्क कीजिए। (2)

व्याख्या सहित **उत्तर**

1. *(क) (iii)* जाति आधारित व्यवस्था ने *(ख) (i)* कर्म आधारित
(ग) (ii) जाति आधारित सामाजिक व्यवस्था पर *(घ) (i)* कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का
(ङ) (i) भारत की आदिकालीन जातियों तथा बाहर से आकर बसने वाली आर्य जातियों से निर्मित हुआ है
(च) (ii) दो भिन्न दिशाओं से
(छ) (iv) 1 और 3 *(ज) (i)* जातिगत स्तरीकरण से
(झ) (ii) एक समाज के पद स्तरों की
(ञ) (i) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

2. *(क) (ii)* तप, श्रम और संयम का आदर्श प्रस्तुत करने के कारण
(ख) (iv) ये सभी *(ग) (iv)* 1 और 3
(घ) (i) लोकहित में स्वयं कष्ट झेलना *(ङ) (i)* 2 1 3

3. *(क) (iv)* ये सभी *(ख) (iii)* 19वीं
(ग) (ii) वर्गीज समिति *(घ) (ii)* जो विशेष प्रकार की रिपोर्टिंग करते हैं
(ङ) (ii) 2 1 4 3

4. *(क) (i)* भोर के समय वातावरण का रंग नीले शंख जैसा बुझा होने के कारण
(ख) (ii) राख से लीपा हुआ चौका–उपमा अलंकार *(ग) (ii)* वातावरण में नमी
(घ) (iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ङ) (i) नीले स्वच्छ आकाश को

5. *(क) (i)* समाज में व्याप्त अंधविश्वासों के खिलाफ संघर्ष करने वाली सभा
(ख) (iv) उपमंत्री *(ग) (i)* अंधविश्वास
(घ) (iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
(ङ) (iii) 3 1 2

6. *(क) (iv)* ये सभी
(ख) (i) छुट्टी के समय चलते-चलते जूनियरों से कोई मानेरंजक बात करके
(ग) (i) उनके मन में अंतर्द्वंद्व चलता रहता है।
(घ) (iv) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(ङ) (ii) वे राव साहब का सम्मान करते हैं
(च) (i) उसके परिश्रम व लगनशीलता की प्रवृत्ति का।
(छ) (i) ये अन्न उपजाते नहीं थे, उसका आयात करते थे।
(ज) (ii) वह आधुनिक जीवन मूल्यों को अपनाना चाहती थी।
(झ) (iii) यह दस फीट चौड़ा तथा पच्चीस फीट गहरा था।
(ञ) (iv) 1, 3 और 4

7. *(क)* **अपने जीवन की मधुर स्मृतियों का वर्णन**

मेरे जीवन की मधुर स्मृतियाँ मेरे बचपन से जुड़ी हैं, जो मेरे हृदय को रोमांचित करती हैं। बचपन के दिन किसी भी व्यक्ति के जीवन के बड़े महत्त्वपूर्ण दिन होते हैं। बचपन में सभी व्यक्ति चिंतामुक्त जीवन जीते हैं। बचपन के दिनों में खेलने, उछलने-कूदने, खाने-पीने में बड़ा आनंद आता है। उन दिनों में माता-पिता, दादा-दादी तथा अन्य बड़े लोगों का प्यार और दुलार बड़ा अच्छा लगता है। एक बार हम सभी छुट्टियों में कश्मीर गए थे। वहाँ के नजारे बहुत सुहावने थे और जब हम बर्फ की पहाड़ियों पर चल रहे थे, तभी मेरा पैर फिसल गया और मैं फिसलकर नीचे आ गया, लेकिन मुझे कोई चोट नहीं आई थी। थोड़ी देर बाद मेरी बुआ का लड़का भी फिसलकर नीचे आ गया। यह देखकर हम सभी को हँसी आ गई और धीरे-धीरे करके सभी फिसलकर नीचे आने लगे। इस प्रकार उस समय हमने बहुत मजे किए। वे पल आज भी मुझे बहुत याद आते हैं। इसी प्रकार बचपन की एक अन्य घटना मुझे अभी तक याद है। उन दिनों में तीसरी कक्षा में पढ़ता था। मेरी अर्द्धवार्षिक परीक्षा चल रही थी। हिंदी की परीक्षा में हाथी पर निबंध लिखने का प्रश्न आया था। निबंध लिखने के क्रम में मैंने 'चल-चल मेरे हाथी' वाली फिल्म गीत की चार पंक्तियाँ लिख दी। इसकी चर्चा पूरे विद्यालय में फैल गई। शिक्षकगण एवं माता-पिता सभी ने हँसते हुए मेरी प्रशंसा की। परंतु उस समय मेरी समझ में नहीं आया कि मैंने अच्छा किया या बुरा। इस तरह बचपन की कई यादें ऐसी हैं जो भुलाए नहीं भूलतीं। इन मधुर स्मृतियों के कारण ही फिर से पाँच-सात वर्ष का बालक बनने की इच्छा होती है, परंतु बचपन में किसी को पता ही कहाँ चलता है कि ये उसके जीवन के सुनहरे दिन हैं।

(ख) **वृक्ष मनुष्य के सच्चे हितैषी हैं**

वृक्ष संपूर्ण विश्व के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। यदि इस धरती पर कोई वृक्ष नहीं होगा, तो मनुष्य का जीवन जीना भी बहुत मुश्किल होगा, क्योंकि पेड़-पौधे ही मनुष्य को ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और कार्बन-डाइ-ऑक्साइड का अवशोषण करते हैं।

मनुष्य वृक्षों द्वारा शुद्ध हवा प्राप्त करते हैं और एक सुंदर वातावरण बनाए रखते हैं। मनुष्यों द्वारा वृक्षों का उपयोग कई कार्यों के लिए किया जाता है, जिसमें पेड़ों की लकड़ी से कागज, गोंद और फर्नीचर आदि सामान बनाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त वृक्षों से फल, फूल और भोजन भी प्राप्त होता है।

इस संसार में पेड़-पौधों से मिलने वाली अनेक महत्त्वपूर्ण चीजे हैं, जिनमें अनाज, दाल, फल, सब्जियाँ, औषधियाँ आदि सम्मिलित हैं, लेकिन पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण पारिस्थितिक प्रणाली में विचलन आ गया है; जैसे-बाढ़, सूखा, भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ रही हैं, लेकिन कुछ लोग लालची स्वभाव के कारण इन आपदाओं से सीख नहीं लेते, यदि यह सब इसी प्रकार चलता रहा, तो पृथ्वी खतरे में पड़ जाएगी और तब हमें जीने के लिए न ऑक्सीजन मिलेगी और न ही भोजन। अतः प्रत्येक मनुष्य को वृक्षों से लाभ लेने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए। अपने स्तर पर पर्यावरण की रक्षा के लिए सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर वृक्षारोपण कार्यक्रमों पर बल देना चाहिए, क्योंकि वृक्ष मनुष्य के सच्चे हितैषी होते हैं, वे स्वार्थी नहीं होते।

(ग) **फैशन का बढ़ता चलन**

मनुष्य पैदा होते ही परंपराओं, रीति-रिवाजों, शिष्टाचारों, औपचारिकताओं का गुलाम बन जाता है। इसी प्रकार वह फैशन से भी प्रभावित होता है। समय के साथ समाज की व्यवस्था में बदलाव आते रहते हैं। इन्हीं बदलावों के अंतर्गत रहन-सहन में भी परिवर्तन होता है। किसी भी समाज में फैशन वहाँ की जलवायु, विकास तथा परिवर्तन पर निर्भर करता है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ वहाँ के निवासियों के जीवन स्तर में भी परिवर्तन आता है।

20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से समाज के खुलेपन की नींव पड़ी, जिसमें फिल्मों के द्वारा फैशनपरस्ती को बढ़ावा दिया गया। इसकी देखा-देखी युवाओं में भी फैशनपरस्ती का मोह बढ़ने लगा। इससे संपूर्ण सामाजिक जीवन फैशनपरस्ती की चपेट मे आ गया है। वर्तमान समय में फैशन के विविध रूप देखने को मिल रहे हैं। युवतियाँ एवं प्रौढ़ नए-नए फैशन के विज्ञापन करते प्रतीत होते हैं; जैसे-पारदर्शी वस्त्र पहनकर घूमना, बालों में नई-नई कटिंग, सौंदर्य प्रसाधनों के द्वारा चेहरे को जरूरत से अधिक आर्कषक बनाना आदि। चाहे भरपेट भोजन न मिले, रोजगार की सुव्यवस्था न हो, पुरानी पीढ़ी के लोग दुत्कारते रहें, तब भी नई पीढ़ी फैशनपरस्ती को सभ्य जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन मानने लगी है। इस प्रकार समाज में उठना, बैठना, वार्तालाप करना, चलना फिरना, खाना-पहनना आदि सब फैशन के अनुसार ढाला जाने लगा है। समय के अनुरूप स्वयं को ढालना उचित है, परंतु दिखावटी फैशन के मोह में पड़कर स्वयं को पतन की ओर धकेलना उचित नहीं है। सामाजिक जीवन पर बढ़ते हुए फैशन का जो दुष्प्रभाव पड़ रहा है, उस पर प्रतिबंध आवश्यक है।

8. *(क)* कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने में देशकाल और वातावरण का चित्रण अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि प्रत्येक घटना, पात्र, समस्या का अपना देशकाल और वातावरण होता है। कहानी में वास्तविकता का पुट लाने के लिए देशकाल और वातावरण का प्रयोग किया जाता है। कहानी को प्रामाणिक और रोचक बनाने के लिए इनका प्रयोग अत्यंत आवश्यक है।

अथवा

अभिनेयता वह कला है, जिसके द्वारा अभिनेता चलचित्र या नाटक में किसी चरित्र का अभिनय करता है। अभिनेता परिकल्पना एवं दर्शक के बीच माध्यम का कार्य करता है। अभिनय की कला का ज्ञान एवं अभिनेता के भाव प्रस्तुतीकरण को सार्थक बनाता है।

नाटकों में अभिनेयता न होने पर दर्शकों के हृदय में भाव या अर्थ अभिभूत नहीं हो पाएगा। अतः नाटक नीरस हो जाएगा।

(ख) फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है। फीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है। फीचर में लेखक को अपनी राय, दृष्टिकोण और भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर मिलता है। फीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती है, क्योंकि फीचर तथ्यों का ललित भाषा एवं वैयक्तिक शैली में भावनात्मक प्रस्तुति है।

अथवा

सिनेमा या मंच (अभिनीत नाटकों की तुलना में) रेडियो नाटक की अवधि छोटी इसलिए रखी जाती है, क्योंकि रेडियो पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है। रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा व रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न तथा मुश्किल भी होता है। इसमें संवादों को ध्वनि प्रभावों के माध्यम से संप्रेषित करना होता है। यहाँ न तो मंच सज्जा, वस्त्र सज्जा होती है और न ही अभिनेता के चेहरे की भाव भंगिमा। केवल आवाज के माध्यम से ही नाटक को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मनुष्य की एकाग्रता सीमित होती है। सामान्य रूप से रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट रखी जाती है, क्योंकि मनुष्य की सुनने की एकाग्रता अवधि 15 से 30 मिनट तक की ही होती है। अतः इन सभी कारणों से रेडियो नाटक की अवधि 15-30 मिनट रखी जाती है।

9. *(क)* **रक्तदान शिविर**

रक्तदान महादान होता है, क्योंकि इसके द्वारा अनेक लोगों को नया जीवन प्राप्त होता है। हमारे क्षेत्र में भी नर्सिंग कॉलेज द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 500 लोगों द्वारा रक्तदान किया गया, जिसमें हमारे क्षेत्र के विधायक द्वारा भी रक्तदान किया गया। विधायक ने कहा है कि किसी के जीवन को बचाने के लिए रक्तदान करना सबसे महत्त्वपूर्ण दान है। इसलिए जो लोग सक्षम हैं तथा स्वस्थ हैं, उन्हें रक्तदान अवश्य करना चाहिए। इन्होंने नर्सिंग कॉलेज की इस पहल की प्रशंसा करते हुए कहा की रक्तदान शिविरों के माध्यम से हम प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के जीवन को बचाने का कार्य करते हैं। रक्तदान के लाभ और मानवता के लिए इसकी आवश्यकता के विषय में अधिक-से-अधिक लोग जागरूक हों इसके लिए रक्तदान शिविरों के आयोजन होने चाहिए तथा इसके लिए लोगों को भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। साथ ही दूसरे लोगों को भी जागरूक करना चाहिए। कुछ लोगों के मन में रक्तदान को लेकर कुछ गलत आशंकाएँ होती हैं; जैसे-रक्तदान से खून की कमी हो जाती है, स्वास्थ्य खराब हो जाता है आदि। ऐसे लोगों को समझाना चाहिए तथा इसके बारे में पूर्व जानकारी देनी चाहिए, जिससे वह भी रक्तदान करके पुण्य कमा सके।

(ख) जिस घटना का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर सीधा पड़ता है, उस घटना के समाचार बनने की संभावना अधिक होती है। जो घटना अथवा समस्या पाठक, दर्शक, श्रोता के आस-पास के क्षेत्र एवं जीवन से संबंध रखती है तथा उसके जीवन पर सीधा प्रभाव डालती हो उससे संबंधित जानकारी को प्राप्त करने की उसकी स्वाभाविक इच्छा होती है। सरकार का कोई निर्णय यदि सीमित लोगों को प्रभावित एवं लाभान्वित करता है, तो यह बड़ा समाचार नहीं होगा।

(ग) अखबारों और पत्रिकाओं में किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या की जाती है, इसे ही विशेष रिपोर्ट कहा जाता है। विशेष रिपोर्ट निम्नलिखित प्रकार की होती हैं

(i) **खोजी** (इन्वेस्टिगेटिव) **रिपोर्ट** इस रिपोर्ट में रिपोर्टर मौलिक शोध और छानबीन के माध्यम से ऐसी सूचनाएँ या तथ्य सामने लाता है, जो सार्वजनिक तौर पर पहले से उपलब्ध नहीं थीं। खोजी रिपोर्ट का प्रयोग प्रायः भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किया जाता है।

(ii) **इन-डेप्थ रिपोर्ट** इस रिपोर्ट में सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की गहरी छानबीन की जाती है तथा उसके आधार पर किसी घटना, समस्या, मुद्दों से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाया जाता है।

(iii) **विश्लेषणात्मक रिपोर्ट** इस रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या से तथ्यों का विश्लेषण या व्याख्या की जाती है।

(iv) **विवरणात्मक रिपोर्ट** इस रिपोर्ट में किसी घटना या समस्या के विवरण को सूक्ष्म या विस्तृत रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

10. *(क)* 'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' कविता में लक्ष्मण के प्रति श्रीराम के प्रेम की हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है। यहाँ श्रीराम का मानवीय रूप दृष्टिगत होता है। वे साधारण मानव की तरह अधीर होते हैं तथा कहते हैं कि उन्हें यदि ज्ञात होता कि वन में भाई का विछोह होगा, तो वे पिता को दिए गए वचन का भी पालन नहीं करते।

वे कहते हैं कि संसार में पुत्र, स्त्री आदि तो एकाधिक बार मिल जाते हैं, परंतु सहोदर भाई पुनः नहीं मिलता। वे कहते हैं कि लक्ष्मण के बिना वे कौन-सा मुँह लेकर अयोध्या जाएँगे? इन पंक्तियों में श्रीराम की आंतरिक व्यथा का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है।

(ख) किशोर और युवा अवस्था ऐसी अवस्थाएँ होती हैं, जिसमें क्षमता और इच्छाशक्ति उच्च स्तर पर होती हैं। ये स्वयं अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं और उसे पाने की हर संभव कोशिश करते हैं। उनकी आँखों में जीवन की ऊँचाइयों को पाने के सपने होते हैं। किशोर तथा युवा वर्ग अपनी निश्छलता से विश्व की एकता को स्थायित्व दे सकते हैं।

(ग) 'बगुलों के पंख' एक सुंदर दृश्य कविता है। कविता से गुजरते हुए एक-एक दृश्य चित्र की भाँति उभर जाता है। कवि काले बादलों के नीचे से पंक्ति बनाकर उड़ते बगुलों को देखता रह जाता है। ये उसे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं। यह दृश्य इतना मोहक है कि कवि इसमें अटका-सा रह जाता है। कवि इसे माया कहता है। इस दृश्य में कवि प्रकृति सौंदर्य से बँधने तथा बिंधने की चरम स्थिति को व्यक्त करता है। ऐसा प्रकृति के इस दृश्य का कवि के मन पर पड़ने वाले मोहक प्रभाव के कारण संभव हुआ है।

11. *(क)* मूर्च्छित हुए लक्ष्मण को देखकर श्रीराम बहुत ज्यादा भाव-विह्वल हो रहे हैं। वे लक्ष्मण के प्रति अपना मोह और स्नेह प्रकट करते हुए कहते हैं कि हे भाई लक्ष्मण, तुम्हारे बिना मेरी स्थिति इतनी दयनीय है कि मैं स्वयं को इस प्रकार शक्तिहीन महसूस कर रहा हूँ, जिस प्रकार पक्षी अपने पंखों के बिना दीन-हीन हो जाते हैं तथा मणि के बिना साँप और सूँड़ के बिना हाथी लाचार हो जाता है। वह अपने महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर पाते।

(ख) जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं, तो वे चाहते हैं कि उनकी पतंग सबसे ऊँची रहे, क्योंकि वे पतंग के माध्यम से सारे ब्रह्मांड में घूम लेना चाहते हैं। वे कल्पना की रंगीन दुनिया में खो जाते हैं, इसलिए उनके लिए पृथ्वी का प्रत्येक कोना अपने आप सिमटता चला जाता है अर्थात् पतंग उड़ाने के समय बच्चों के सामने पृथ्वी का कोना-कोना सिमट जाता है।

(ग) 'उषा' कविता में कवि ने भोर के नभ की पवित्रता, निर्मलता तथा उज्ज्वलता को विविध बिंबों एवं प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया है। 'राख से लीपा हुआ चौका' पवित्रता का प्रतीक है। 'नील जल में किसी की गौर झिलमिल देह' में निर्मलता तथा 'काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो' में उज्ज्वलता का प्रतिबिंब है। भोर के नभ के बदलते सौंदर्य को कवि ने जन-जीवन की गतिशीलता तथा मानवीय गतिविधियों में हो रहे परिवर्तनों के रूप में रखा है।

12. *(क)* भक्तिन की तर्कशक्ति बहुत अच्छी थी। वह जिस बात को मानती थी, उसे पूरी शक्ति से कहती थी। जब उससे पूछा गया कि वह घर में इधर-उधर रखे पैसों को मटकी में क्यों डालती है? यह तो चोरी है, तो इसका प्रत्युत्तर देते हुए भक्तिन ने कहा कि यह तो पैसा सँभालकर रखने का एक तरीका है और इसके लिए वह तर्क करने को भी तैयार थी। वह शास्त्रों के तर्कों द्वारा दूसरों को अपने मन के अनुकूल बना लेने में भी निपुण थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भक्तिन के शास्त्रार्थ को स्वीकार करना किसी तर्क शिरोमणि के लिए भी संभव नहीं था।

(ख) लेखक के अनुसार, सभी लोगों पर बाजार का जादू नहीं चलता था अर्थात् जिन लोगों की क्रय-शक्ति होने पर भी मन भरा हुआ हो, उसमें किसी चीज को लेने का निश्चित लक्ष्य हो तथा अन्य किसी सामान की लालसा न हो, ऐसे लोगों पर बाजार का जादू नहीं चलता है। भगत जी भी उन्हीं लोगों में से एक थे। इनका चूरन प्रसिद्ध था वे एक दिन में छः आने से अधिक नहीं कमाते थे और इतनी कमाई होती कि वह बाकी चूरन बच्चों में मुफ्त बाँट देते थे। वे बाजार से काला नमक और जीरा खरीदने जाते, तो सीधे पंसारी के पास जाकर खरीद लाते थे। उन पर चौक बाजार का न कोई आकर्षण रहता था और न कोई लालच। बाजार की चकाचौंध से मुक्त रहने से ही उन पर उसका जादू नहीं चलता था।

(ग) 'काले मेघा पानी दे' कहानी में इंदर सेना का अन्य नाम 'मेंढक मंडली' था। गाँव के कुछ लोगों को लड़कों का नंग-धडंग होकर कीचड़ में लथपथ होना अच्छा नहीं लगता था। वे उनके अंधविश्वास एवं ढोंग से चिढ़ते थे। इस कारण वे उन लड़कों की टोली से चिढ़ने के कारण उन्हें 'मेंढक मंडली' नाम से पुकारते थे।

13. *(क)* भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती इसलिए हो गई, क्योंकि भक्तिन देहाती थी। शहर में लेखिका के पास सेविका के रूप में आ जाने से महादेवी का खाना-पहनना देहाती हो गया। भक्तिन ने देहाती खाने की विशेषताएँ बता बताकर उनके खाने की आदत बदल डाली। लेखिका को रात में मकई के दलिये के साथ मट्ठा पीना पड़ा, बाजरे के तिल मिलाकर बने पुए खाने पड़े और ज्वार के भुने हुए भुट्टे की खिचड़ी खानी पड़ी। उसकी बनाई हुई सफेद महुए की लापसी को संसार के श्रेष्ठ हलवे से अधिक स्वादिष्ट मानकर खाना पड़ा। भक्तिन ने लेखिका को देहाती भाषा और कहावतें भी सिखा दीं। इस प्रकार महादेवी देहाती बन गई।

(ख) कालिदास अनासक्तयोगी की तरह थे, इसलिए वे मेघदूत काव्य का निर्माण कर सके। शिरीष वृक्ष अद्भुत, अवधूत तथा अनासक्त है। वह मस्त व फक्कड़ जैसा है। इस तरह कालिदास आदि महाकवि भी अनासक्त, मस्त और फक्कड़ा प्रवृत्ति के होते हैं। कवि को हानि-लाभ, राग-द्वेष, यश-अपयश आदि की चिंता न करके अनासक्त रहना पड़ता है। सब कुछ अवधूत की तरह सहन करने तथा अनासक्त रहकर आगे बढ़ने से ही महान् लक्ष्य मिलता है।

(ग) 'श्रम विभाजन और जाति-प्रथा' पाठ में 'जातिवाद' का पोषक श्रम-विभाजन को कहा गया है। जातिवाद के पोषको का मानना है कि आधुनिक सभ्य समाज में कार्य-कुशलता लाने के लिए श्रम-विभाजन आवश्यक है, परंतु जाति-प्रथा में श्रम-विभाजन स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह व्यक्ति की रुचि, कार्य-कुशलता तथा क्षमता पर आधारित नहीं हैं। यह भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण है।

14. *(क)* 'जूझ' कहानी के लेखक का जीवन-संघर्ष सभी के लिए एक आदर्श प्रेरणा स्रोत कहा जा सकता है। वह जटिल परिस्थितियों में भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए कठिन प्रयास करता है। वह खेती का काम करने के साथ-साथ पढ़ाई करता है। उसके जीवन में आर्थिक समस्या भी है और उसे पैसों की कमी है। उसके सहपाठी उसके पहनावे को लेकर खिल्ली उड़ाते हैं। इन सब बाधाओं को वह अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के दम पर पार कर लेता है। कविता लिखने का शौक अंततः उसके लिए बहुत बड़ा लक्ष्य बन जाता है, जिसे वह सफलतापूर्वक हासिल करता है। वस्तुतः कहानी के लेखक में समस्याओं से जूझने की प्रवृत्ति है। इसी जूझने की प्रवृत्ति के कारण वह अपने जीवन-लक्ष्यों को एक के बाद एक प्राप्त करता जाता है। वह अपने आलसी एवं आवारा किस्म के पिता को भी संतुष्ट रखते हुए अपनी आगे की पढ़ाई करता है। विपरीत परिस्थितियों से जूझने की क्षमता के अतिरिक्त कहानी के लेखक में कठिन परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प संबंधी चारित्रिक विशेषताएँ मौजूद हैं।

वह पढ़ने के लिए किसी भी स्तर का परिश्रम करने को सहर्ष तैयार रहता है। वह अपनी धुन में रमने की प्रवृत्ति यानी लगनशीलता के कारण ही उच्च स्तर का कवि बन सका। इस तरह, कहा जा सकता है कि 'जूझ' कहानी के लेखक का जीवन-संघर्ष हमारे लिए अत्यधिक प्रेरणादायक है।

(ख) सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सिंधु सभ्यता के सामाजिक वातावरण को बहुत अनुशासित होने का अनुमान लगाया गया है। वहाँ का अनुशासन ताकत के बल पर नहीं था। नगर योजना, वास्तुशिल्प, मुहर, पानी या साफ-सफाई जैसी सामाजिक व्यवस्था में एकरूपता से यह अनुशासन प्रकट होता है।

सिंधु सभ्यता में सुनियोजित नगर थे, पानी की निकासी की व्यवस्था अच्छी थी। सड़कें लंबी व चौड़ी थीं, कृषि भी की जाती थी, यातायात के साधन के रूप में बैलगाड़ी भी थी। हर नगर में मुद्रा, अनाज भंडार, स्नानगृह आदि थे तथा पक्की ईंटों का प्रयोग होता था। सिंधु सभ्यता में प्रदर्शन या दिखावे की प्रवृत्ति नहीं थी। यही विशेषता इसको अलग सांस्कृतिक धरातल पर खड़ा करती है। यह धरातल संसार की दूसरी सभी सभ्यताओं से पृथक् है।

(ग) यशोधर बाबू को 'आदर्श व्यक्तित्व' कहा ही इसलिए गया है, क्योंकि वे जीवनभर अपने सिद्धांतों पर चलते रहे हैं। यशोधर बाबू पुराने विचारों वाले व्यक्ति हैं और वे ये भी मानते हैं कि उनके बच्चे आधुनिक युग के साथ चलते-चलते यथार्थ दुनिया के बारे में उनसे अधिक अच्छा सोच पाते हैं। उन्हें समाज में जहाँ कहीं भी नयापन दिखाई देता है, तो वे कहते हैं 'समहाउ इंप्रॉपर'। यशोधर बाबू अपने सामाजिक मूल्यों को बनाए रखना चाहते हैं। आज विश्व में हमें सबके साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलना ही पड़ता है। मेरी दृष्टि में नई पीढ़ी के उन्हीं विचारों को अपनाना उचित है, जिनसे अपना और समाज का विकास हो। पुरानी पीढ़ी को रहन-सहन, पहनावा, खाना-पीना और व्यवहार में थोड़ा बहुत बदलाव लाना ही चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि हम लड़कियों को न पढ़ाएँ तो नुकसान अपना ही करेंगे, क्योंकि शिक्षित नारी पूरे परिवार को शिक्षित बनाती है। इसलिए आधुनिक युग की सोच है कि यशोधर बाबू जैसे लोगों को अपने पुराने विचारों में नए विचारों को भी शामिल कर लेना चाहिए।